सूरह अल-फातिहा पर विचार (3 का भाग 1)

रेटिंग:

विवरण: ?????? ????? ?? ???? ???? ???? ???? ???? ??? ?? ????????? ??? 1: ???? ??-?????? ?? ?????? ?? ??? ??? ?? ????? ?? ??????

श्रेणी: पाठ > पवित्र क़ुरआन > चयनित छंद की व्याख्या

द्वारा: Imam Mufti

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य

·क़ुरआन के अन्य सूरह की तुलना में सूरह अल-फातिहा के महत्व को समझना।

·सूरह अल-फातिहा के अनुवाद को समझना।

·सूरह अल-फातिहा के नाम और उनके महत्व को जानना।

अरबी शब्द

·*????* - प्रार्थना की इकाई।

·*????* - क़ुरआन का अध्याय।

·*????* - (बहुवचन - हदीसें) यह एक जानकारी या कहानी का एक टुकड़ा है। इस्लाम में यह पैगंबर मुहम्मद और उनके साथियों के कथनों और कार्यों का एक वर्णनात्मक रिकॉर्ड है।

क़ुरआन में 114 असमान लंबाई वाले सूरह हैं। सूरह अल-फातिहा क़ुरआन का पहला सूरह है और जैसा की पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने आदेश दिया इसे हर नमाज की प्रत्येक रकात में पढ़ा जाता है:

"क़ुरआन के शुरुआती अध्याय के बिना कोई नमाज वैध नहीं है।" (सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लिम)

यह मक्का में पैगंबर को प्रकट हुआ था। क़ुरआन के सभी छंदों में से अल्लाह ने इस सूरह को हमारे लिए हर नमाज में पढ़ने के लिए चुना है। दुनिया के लगभग हर मुसलमान ने इसे याद कर रखा है। जब कोई व्यक्ति इस्लाम अपनाता है, तो सबसे पहली चीज़ जो वह याद करता है, वह है यह शुरुआती अध्याय सूरह फातिहा है। ऐसा इसलिए है ताकि वे निर्धारित प्रार्थना कर सकें। जब भी हम नमाज़ (अनुष्ठान प्रार्थना) पढ़ें तो इसका अर्थ जानना और समझना चाहिए। जब कोई व्यक्ति अपनी नमाज (अनुष्ठान प्रार्थना) में सूरह अल-फातिहा पढ़ता है, तो आसमान और पृथ्वी का ईश्वर उसके द्वारा कहे गए हर छंद का जवाब देता है!

Text of *Surah al-Fatiha*

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ

1. अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है।

الْحَمْدُ للّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

2. सब प्रशंसायें अल्लाह के लिए हैं, जो सारे संसारों का पालनहार है;

الرَّحْمـنِ الرَّحِيمِ

3. जो अत्यंत कृपाशील और दयावान् है।

مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ

4. जो प्रतिकार (बदले) के दिन का मालिक है।

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ

5. (ऐ अल्लाह!) हम केवल तुझी को पूजते हैं और केवल तुझी से सहायता मांगते हैं।

اهدِنَـــا الصِّرَاطَ المُستَقِيمَ

6. हमें सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा।

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنعَمتَ عَلَيهِمْ غَيرِ المَغضُو

7. उनका मार्ग, जिनपर तूने पुरस्कार किया। उनका नहीं, जिनपर तेरा प्रकोप हुआ और न ही उनका, जो कुपथ (गुमराह) हो गये।

सूरह अल-फातिहा के नाम और उनके महत्व

इस सूरह के अन्य नाम हैं जैसे शुरुआत[1], क़ुरआन का सार[2], सात बार-बार दोहराए जाने वाले छंद[3], और शानदार वाचन[4]।

वास्तव में इस सूरह मे क़ुरआन का सार है और इसमें इसके सिद्धांत और प्रमुख विषय शामिल हैं। इसमें संक्षिप्त रूप में क़ुरआन में निर्धारित सभी मूलभूत सिद्धांत शामिल हैं: ईश्वर के एक और विशिष्ट होने का सिद्धांत, ब्रह्मांड के आरंभक, सभी जीवन देने वाली कृपा का फव्वारा, जिसके प्रति मनुष्य जिम्मेदार है, एकमात्र शक्ति जो मार्गदर्शन और सहायता कर सकती है; मृत्यु के बाद के जीवन का सिद्धांत और मनुष्य के व्यवहार के परिणाम; ईश्वर के संदेशवाहकों के माध्यम से मार्गदर्शन का सिद्धांत और इससे निकले सभी सच्चे धर्मों (अतीत में रहने वाले लोगों और गलती करने वाले लोगों के लिए) की निरंतरता का सिद्धांत; और अंत में सर्वोच्च सत्ता की इच्छा के आगे आत्म-समर्पण की आवश्यकता और इस प्रकार, सिर्फ उसकी ही पूजा करने का सिद्धांत। यही कारण है कि इस सूरह को एक प्रार्थना के रूप में बनाया गया है, जिसे आस्तिक लगातार दोहराते हैं।

इसे प्रार्थना भी कहा जाता है, जैसा कि हदीस कुदसी [5] में है:

"मैंने प्रार्थना (अर्थात सूरह अल-फातिहा) को दो भागों में विभाजित कर दिया है; एक मेरे लिए और एक मेरे दास के लिए, और मेरे दास को वह मिलेगा जो वह मांगेगा। जब दास कहता है, सब प्रशंसायें अल्लाह के लिए हैं, जो सारे संसारों का पालनहार है; मैं कहता हूं, 'मेरे दास ने मेरी प्रशंसा की है।' जब वह कहता है, जो अत्यंत कृपाशील और दयावान् है; मैं कहता हूं, 'मेरे दास ने मेरी गुणगान की है।' जब वह कहता है, न्याय के दिन का स्वामी; तो मैं कहता हूं, 'मेरे दास ने मेरी महिमा की है'। जब वह कहता है, हम केवल तुझी को पूजते हैं और केवल तुझी से सहायता मांगते हैं; तो मैं कहता हूं, 'यह मेरे और मेरे दास के बीच है, और मेरे दास को वह मिलेगा जो वह मांगेगा।' जब वह कहता है, हमें सीधा मार्ग दिखाओ, उनका मार्ग, जिनपर तूने पुरस्कार किया, उनका नहीं जिनपर तेरा प्रकोप हुआ और न ही उनका जो कुपथ हो गये; मै कहता हूं, 'यह मेरे दास के लिए है, और मेरे दास को वह मिलेगा जो वह मांगेगा।'" (सहीह मुस्लिम)

इसे प्रार्थना कहने का एक कारण यह है कि इस सूरह का अंश स्मरण भी है और प्रार्थना भी है।' हमें सीधे रास्ते पर ले जाओ' अल्लाह से मांगा जाने वाला सबसे बड़ा उपहार है: ईश्वरीय मार्गदर्शन।

फुटनोट:

[1] सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लमि

[2] सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लमि

[3] सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लमि

[4] सहीह अल-बुखारी

[5] हदीस कुदसी एक हदीस है जहां पैगंबर अपने ईश्वर के शब्दों का वर्णन करते हैं।

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/index.php/hi/articles/115

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।